Digitization by eGangotri. Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

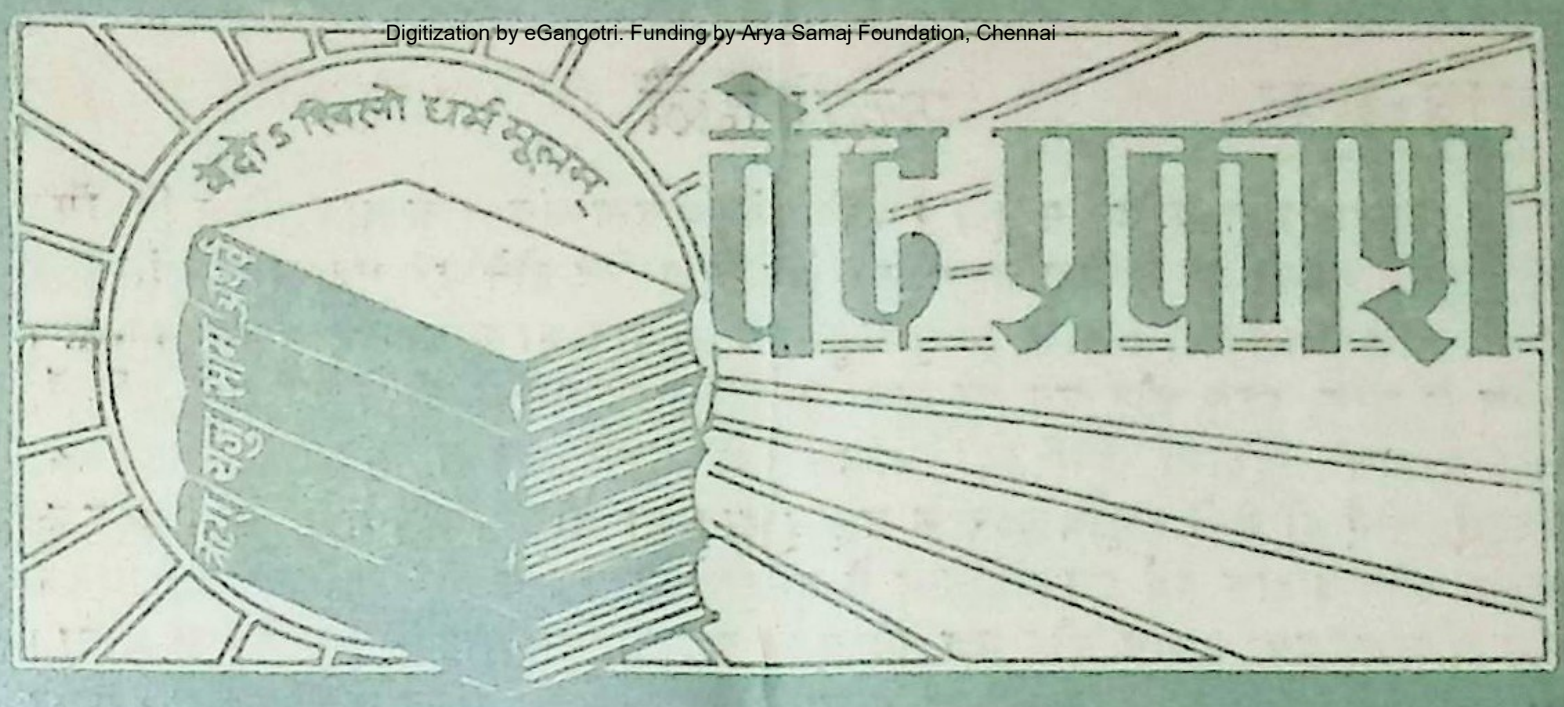

श्रेष्ठ जीवन

त्वया वयमुत्तमं धीमहे वयो बृहस्पते पप्रिणा सस्निना युजा ।
मा नो दुःशंसो अभिदिप्सुरीशत प्र सुशंसा मतिभिस्तारिषीमहि ॥ २।२३।१०

पदार्थ :—हे (बृहस्पते) विद्वन् ! (पप्रिणा) परिपूर्ण (सस्निना) शुद्ध पवित्र पदार्थ (युज) युक्त (त्वया) तुम्हारे साथ वर्तमान (वयम्) हम लोग (उत्तमम्) श्रेष्ठ (वयः) जीवन को (धीमहे) धारण करें जिससे (अभिदिप्सुः) सब ओर से कपट की इच्छा करनेवाला (दुःशंसः) जिसकी दुष्ट कहावत प्रसिद्ध है वह चोर (नः) हम लोगों का (मा, ईशत) ईश्वर न हो और (मतिभिः) प्रजाओं के साथ वर्तमान (सुशंसाः) जिनकी सुन्दर स्तुति ऐसे हम लोग (प्र, तारिषीमहि) उत्तमता से तरें सर्व विषयों के पार पहुंचें ।

भावार्थ :—जो पूर्ण विद्यावाले योगी शुद्धात्माजनों का संग करते हैं, वे दीर्घजीवी होते हैं; जो विद्वानों के सहचारी होते हैं उनके लिए दुःख देने को कोई भी समर्थ नहीं हो सकते हैं ।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri. Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

बोध-कथा

सच्चा दान

महाभारत का प्रसंग है। १८ दिन के भीषण संग्राम के बाद भीष्म पितामह और दूसरे गुरुओं का उपदेश ग्रहण कर देश में शान्ति होने पर महाराजा युधिष्ठिर ने अश्वमेध यज्ञ किया। यज्ञ की पूर्णाहुति पर महाराजा युधिष्ठिर ने अपने अक्षय कोश से अन्न, वस्त्र और धन का खुला दान किया। अपंगों, दीनों, दुखियों, दरिद्रों, श्रेष्ठ ब्राह्मणों, विद्वानों, तपस्वियों, याचकों को मुक्त हस्त से मुंहमांगा धन-वैभव, वस्तुएं, गौएं दी गयीं। युधिष्ठिर के महान् दान का शोर मच गया। जहां याचक, जनता और ब्राह्मण वर्ग इस महादान से तृप्त होकर प्रसन्न हो रहा था, उसी समय एक अचम्भा हुआ। दान और यज्ञ की जूठन पर लोटता-पलटता एक नेवला आया। उसकी आंखें नीली थीं और उसका आधा शरीर स्वर्ण की तरह उज्ज्वल था। पहले तो वह चिल्लाया फिर उसने कहा—"इस यज्ञ में एकत्र राजाओ ! तुम्हारा यह यज्ञ कैसा है ? तुम्हारा यह तथाकथित महायज्ञ कुरुक्षेत्र में उञ्छवृत्ति पर जीवित रहने वाले उदार ब्राह्मण परिवार के सेर भर के तुल्य सर्वस्वदान की तुलना में निम्न मालूम पड़ता है।

सक्तुप्रस्थेन वो नायं यज्ञस्तुल्यो नराधिपाः।
उञ्छवृत्तेर्वदान्यस्य कुरुक्षेत्रनिवासिनः॥ महा० आश्व० ९०।७

चकित सभा की जिज्ञासा का समाधान करते हुए नेवले ने कहा—"कुछ दिन पहले धर्मक्षेत्र कुरुक्षेत्र में कबूतर की तरह फसल कटने के बाद खेत से अन्न का एक-एक दाना एकत्र करने की उञ्छवृत्ति से एक ब्राह्मण अपने कुटुम्ब का पालन करते थे। एक बार भयंकर अकाल पड़ा, कई दिन वह सपरिवार भूखे रहे, फिर उन्हें सेर भर जौ मिले, उसका सत्तू बनाकर उन्होंने उसे चार हिस्सों में बांटा। एक हिस्सा पुत्र के लिए, दूसरा भाग पुत्रवधू के लिए, तीसरा हिस्सा पत्नी के लिए और चौथा भाग अपने लिए रखा।

ब्राह्मण कुटुम्ब खाने के लिए बैठा था, एक ब्राह्मण अतिथि वहां आए। उन्हें देखकर ब्राह्मण ने अतिथि से कहा—हे ब्राह्मण देवता, न्यायपूर्वक उपार्जित यह पवित्र सत्तू भेंट है, आप इसे स्वीकार करें। (शुचयः सक्तवश्चेमे नियमोपार्जिताः प्रभो प्रतिगृह्णीष्व भद्रं ते मया दत्ता द्विजर्षभः॥ महा० आश्व० ९।३९) अतिथि ने वह सत्तू खा लिया, पर उसकी भूख दूर नहीं हुई। यह देखकर ब्राह्मणी ने अपना सत्तू का हिस्सा दे दिया। यह हिस्सा खाकर भी अतिथि भूखा रहा, तब ब्राह्मण के बेटे ने आग्रह करके सत्तू का अपना हिस्सा दे दिया। अतिथि फिर भी भूखा जान पड़ा, इस पर पुत्रवधू ने अपना सत्तू का भाग भी दे दिया, सत्तू का चौथा भाग खाने पर अतिथि सन्तुष्ट हो गया।

अतिथि स्वयं धर्मराज थे। ब्राह्मण के श्रेष्ठ दान से वह प्रसन्न होकर बोले—"हे ब्राह्मण, प्राणसंकट के समय यह सब सत्तू तुमने शुद्ध हृदय से देकर अपने पुण्य कर्म से स्वर्गलोक पर विजय पा ली। तुमने यह जो दान का फल पाया है, उसकी तुलना बहुत दान वाले अश्वमेध और राजसूय यज्ञ से भी नहीं की जा सकती। यह सत्तू दान देकर तुमने अक्षय ब्रह्मलोक जीत लिया। नेवले ने अन्त में कहा—पूरा ब्राह्मण परिवार जब स्वर्ग चला गया, तो वहां गिरे हुए अन्न के कणों पर लोटने से मेरा आधा मस्तक और शरीर सोने का हो गया। मैं युधिष्ठिर के महायज्ञ की प्रशंसा सुनकर आया था, परन्तु महायज्ञ के महादान की जूठन पर मेरा लोटना व्यर्थ हो गया, तभी मैं कह सकता हूं कि यह महायज्ञ उस ब्राह्मण के सत्तूदान के बराबर नहीं था।

प्रस्तुति—**नरेन्द्र विद्यावाचस्पति**

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri. Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

ओ३म्

वेदप्रकाश

संस्थापक : स्वर्गीय श्री गोविन्दराम हासानन्द

वर्ष ४४, अंक १० वार्षिक मूल्य : बीस रुपये मई १९९५

सम्पा॰ अजयकुमार आ॰ सम्पादक : स्वामी जगदीश्वरानन्द सरस्वती

सामान्य जिज्ञासु के लिए उपनिषदों की देन–५

जीवन को निर्मल कैसे करें : मुण्डक उपनिषत् का लक्ष्य

उपनिषद् में ऐसी विद्या का विवेचन : जिससे सब कुछ जाना जा सकता है

मुण्डक का अर्थ है मूंडने वाला, जिस प्रकार नाई या नापित सिर का मुण्डन करता हुआ सिर के बालों के साथ वहाँ जमी मैल को दूर करता है, उसी प्रकार मुण्डक उपनिषत् का चिन्तक ऋषि इस तत्त्व ज्ञान के माध्यम से, इस की शिक्षा के माध्यम से जीवन को निर्मल करना चाहता है। इस उपनिषत् में उल्लेख है कि बड़ी-बड़ी अट्टालिकाओं के स्वामी एवम् अनेक विद्यालयों के संचालक शुनक के पुत्र शौनक अंगिरा ऋषि के समीप पहुंचे। शौनक ने ऋषि से जिज्ञासा की–"भगवन्, वह कौन-सी विद्या है, जिसके जानने पर सब जान लिया जाए ?" अंगिरा ने बतलाया–देवों में प्रथम देव विश्व के कर्त्ता जगत् के रक्षक ब्रह्मा ने अपने ज्येष्ठ पुत्र अथर्वा को सब विद्याओं की आधार ब्रह्मविद्या का उपदेश दिया। अथर्वा ने यह ब्रह्म विद्या अंगिरा को दी। अंगिरा ने भारद्वाज गोत्री सत्यवाह को वह उपदेश दिया। भारद्वाज ने वह विद्या–परा और अपरा दोनों प्रकार की अंगिरा को सिखलाई।

अंगिरा ने शौनक को बतलाया–"अपरा विद्या में ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद, अथर्ववेद, शिक्षा, कल्प, व्याकरण, निरुक्त, छन्द और ज्योतिष हैं। सम्बद्ध मन्त्र इस प्रकार है–

तस्मै स होवाच द्वे विद्ये वेदितव्ये इति ह स्म, यद् ब्रह्मविदो वदन्ति, परा चैवापरा च ॥४॥ तत्रापरा ऋग्वेदो यजुर्वेदः

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri. Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

सामवेदोऽथर्ववेदः शिक्षा कल्पो व्याकरणं निरुक्तं छन्दो ज्योतिषमिति। अथ परा यया तदक्षरमधिगम्यते ॥५॥

और परा विद्या कौन-सी है, जिसके जानने से अक्षर ब्रह्म-जाना जाता है। ब्रह्म के स्वरूप का चित्रण करते हुए ऋषि कहते हैं, ब्रह्म विद्या से जो ब्रह्म जाना जाता है वह ज्ञानेन्द्रियों से अज्ञेय है, उसे ग्रहण नहीं किया जा सकता है। उसका कोई वंश नहीं, कोई वर्ण-रूप, रंग नहीं, उसके न नेत्र हैं और न कोई श्रवण हैं, उसके हाथ-पैर भी नहीं, हां वह सर्वत्र सर्वव्यापक है, वह नित्य है सूक्ष्मातिसूक्ष्म है, वह अविनाशी है, उस ब्रह्म को धीर पुरुष जान लेते हैं। ऋचा इस प्रकार है--

यत्तददृश्यमग्राह्यमगोत्रमवर्णमचक्षुःश्रोत्रं तदपाणिपादम्। नित्यं विभुं सर्वगतं सुसूक्ष्मं तदव्ययं यद्भूतयोनिं परिपश्यन्ति धीराः॥६॥

एक ब्रह्म से नानाविध सृष्टि का सृजन प्रकार स्पष्ट करते हुए ऋषि बतलाते हैं-जैसे एक मकड़ी जाले का सृजन करती है फिर उसे ग्रहण कर समेट लेती है, जैसे पृथिवी में से ओषधियां पैदा हो जाती हैं; जैसे जीवित पुरुष में से केश और रोम निकल आते हैं, उसी तरह उस अक्षर ब्रह्म से यह विश्व उत्पन्न होता है। मन्त्र इस प्रकार है--

यथा ऊर्णनाभिः सृजते गृह्णते च, यथा पृथिव्याम् ओषधयः सम्भवन्ति। यथा सतः पुरुषात् केशलोमानि तथा अक्षरात् सम्भवति इह विश्वम् ॥७॥

ऋषि बतलाते हैं--ब्रह्म जब विकासोन्मुख हुआ, तब उसने तपस्या की। तपस्या से ब्रह्म केन्द्रित हुआ, उसी से अन्न का उत्पादन हुआ, फिर अन्न से क्रमशः प्राण, मन, सत्य, लोक, कर्म और कर्म से अमृत संज्ञा वाला कर्मफल पैदा होता है। सम्बन्धित मन्त्र इस प्रकार है--

तपसा चीयते ब्रह्म ततो ऽन्नमभिजायते। अन्नात्प्राणो मनः सत्यं लोकाः कर्मसु चामृतम् ॥८॥

प्रकरण का उपसंहार करते हुए ऋषि कहते हैं--जो सर्वज्ञ और सर्ववित् है जिसका तप ज्ञानमय है, उस अक्षर ब्रह्म से ही यह ब्रह्म (हिरण्यगर्भ) नाम, रूप और अन्न उत्पन्न होता है। यह अक्षर ब्रह्म सर्वज्ञ है, सब कुछ जानने के कारण वह सर्ववित् है, जिसका तप ज्ञान स्वरूप 'यस्य ज्ञानमयं तपः' है, इसी कार्य ब्रह्म हिरण्यगर्भ से देवदत्त, विश्वमित्र आदि नाम, शुक्ल-नील स्वरूप तथा व्रीहि, यव गेहूं आदि विविध अन्न उत्पन्न होते हैं।

उपनिषदों की दृष्टि में सृष्टि का उत्पन्न होना एक तप है **यस्य ज्ञानमयं तपः**। तप का अभिप्राय केवल कष्ट सहना ही नहीं च्युत ज्ञानमय तप करना है, प्रदर्शन के लिए कांटों या आग आदि पर नेटना चलना नहीं। सर्वज्ञ सर्वविद् परमेश्वर ने जब अन्न - प्रकृति

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri. Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

के सहयोग से विकास करना प्रारम्भ किया, तब एक ओर ब्रह्म की अध्यात्म -सत्ता थी और विकास के दूसरे छोर पर प्रकृति का प्रतीक अन्न था । एकत्व का प्रतिनिधि ब्रह्म है तो नानात्व का प्रतिनिधि अन्न है । सृष्टि के पत्ते-पत्ते को जान कर हम ज्ञान की प्रक्रिया चलाते हैं। शाखाएं जिस वृक्ष में हैं, वृक्ष जिस भूमि पर है, उस एक का ज्ञान होने पर सृष्टि का सब कुछ जाना जा सकता है—ऋषि अंगिरा ने शिष्य शौनक को यही शिक्षा दी ।

उपनिषत्कार ब्रह्माण्ड सृजन की चर्चा के बाद जानने योग्य दो-अपरा, परा विद्याओं की चर्चा करते हैं । उनमें से अपरा विद्या का प्रमुख उद्देश्य जीवन-व्यवहार को कृतकार्य बनाना है और परा विद्या मुख्यतया अन्तिम सत्ता के स्वरूप का निरूपण करती है । दूसरे शब्दों में कहा जा सकता है, अपरा विद्या में प्रमुख शिक्षा कर्म की है और परा विद्या में ज्ञान की विशेष महत्ता है । अब मुण्डक उपनिषत् के दूसरे खण्ड में कर्म और ज्ञान दोनों ही विषयों की चर्चा की गई है । ऋषि पहले कर्म की महत्ता पर प्रकाश डालते हुए कहते हैं—यह सत्य है, मनीषियों ने वेद मन्त्रों में जो कर्म और विधि-विधान देखे, कर्मकाण्ड का यह विधि-विधान अधिकतर त्रेता युग में भी फैलता गया। इसलिए उसी कर्मकाण्ड पर निर्धारित रूप से आचरण करो । हे सत्य की कामना करने वाले पुरुषो, सुकर्म करने का तुम्हारा यही रास्ता है। (**एष वः पन्थाः सुकृतस्य लोके।**) यज्ञादि के सकाम-कर्म के रास्ते पर चलने की प्रेरणा देते हुए कर्मकाण्डी लोग यज्ञ की अग्नि का चित्र खींचते हुए कहते हैं-जब समिधाओं से अग्नि प्रदीप्त हो और ज्वालाएँ लपटें दे रही हों, तब आज्य भाग नामक घी की दो आहुतियों के मध्य श्रद्धा की आहुति प्रस्तुत करो। (**समिद्धे हव्यवाहने तदा आज्यभागौ अन्तरेणाहुतीः प्रतिपादयेत् श्रद्धया हुतम्**) ऋषि बतलाते हैं- यथाविधि आहुतिप्रदान रूप कर्ममार्ग (स्वर्गादि) लोकों की प्राप्ति का साधन है, उन्हें विधिपूर्वक करना बड़ा कठिन कार्य है, यदि उन्हें विधिपूर्वक पूर्ण न किया जाए तो अनेक विपत्तियां आ सकती हैं ।

ऋषि चेतावनी देते हैं—जो पुरुष कर्मकाण्डी अमावस्या पर किया जाने वाला दर्शेष्टि, पूर्णमासी पर किया जाने वाला पौर्णमासेष्टि, वर्षा के चातुर्मास और शरत्काल में किए जाने वाला आग्रयण यज्ञ नहीं करता, जो ऐसे अवसरों पर अतिथियों की पूजा नहीं करता, जो उचित समय पर विधि के अनुसार इन कर्मों को नहीं करता, जो कर्मकाण्डी अग्निहोत्र में सब देवताओं की पूजा नहीं करता (**अवैश्वदेवम्**) जो विधिरहित हवन करता है (**अविधिना हुतम्**) ऐसे कर्मकाण्डियों के सात लोकों का नाश हो जाता है (**आ सप्तमान् तस्य लोकान् हिनस्ति ।**) मानो उसकी सात पीढ़ियों का नाश कर देता है।

मई १९९५

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri. Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

कर्मकाण्डी अग्निहोत्र में जिस अग्नि को प्रज्वलित करता है, उस अग्नि की काली, कराली (भयानक), मनोजवा (मन की तरह चंचल) सुलोहिता (बहुत लाल) धूम्रवर्णा (धुएं के रंग की) स्फुलिंग (चिनगारी) वाली, विश्वरूपी (अनेक प्रकार की कान्ति वाली सात जिह्वाएं होती हैं। जो याज्ञिक अग्निहोत्र की इन प्रकाशमान जिह्वाओं में यथासमय आहुतियां देता है, उसे सूर्य की रश्मियां वहां पहुंचा देती हैं, जहां देवताओं के अध्यक्ष का निवास स्थान है (**तम् नयन्ति एताः सूर्यस्य रश्मयः यत्र देवानाम् पतिः एकः अधिवासः।**)

याज्ञिक कर्मकाण्डी अग्निहोत्र में जिन अहुतियों को देता है, वे आहुतियां-आओ, आओ कहती हुई उस यजमान को तेजोमयी सूर्य की किरणों के साथ उठा ले जाती हैं। (**सुवर्चस सूर्यस्य रश्मिभिः यजमानं वहन्ति ।**) ये आहुतियां प्रेम और सत्कार की मीठी वाणी बोलती हुई यजमान का स्तवन करती हुई मानो कहती हैं-यह पुण्य ब्रह्मलोक है, जो तुम्हारे सुकृत से तुम्हें प्राप्त हुआ है। (**प्रियां वाचम् अभिवदन्त्यः अर्चन्त्यः एष वः पुण्यः सुकृतः ब्रह्मलोकः।**)

निरा कर्मकाण्ड फलदायी नहीं

ऋषि अंगिरा याज्ञिकों-कर्मकाण्डियों के ज्ञानरहित कर्म को सीमित फल वाला कहते हैं । यह अविद्या, कामना और कर्म का कार्य है, फलतः असार और दुःख का मूल है । उसकी निन्दा करते हुए ऋषि कहते हैं: यजमान, उसकी पत्नी एवं १६ ऋत्विजों द्वारा किए गए यज्ञ कर्म अस्थिर एवं नाशवान् हैं । उन्हें ही श्रेय मानने वाले पुनः बुढ़ापे और मृत्यु को प्राप्त करते हैं । मुनि आगे बतलाते हैं। अविद्या में फंसे हुए जो अपने को ही धीर और पण्डित मानते हैं, ऐसे मूढ़ पुरुषों की अवस्था उन अन्धों के तुल्य है, जिनका पथ-प्रदर्शन अन्धे ही करते हैं वे लोग इधर-उधर भटकते फिरते हैं ।

ऋषि बतलाते हैं बहुधा अविद्या में फंसे हुए मूर्ख लोग जो बाल-बुद्धि पुरुष होते हैं-'हम कृतार्थ हो गए हैं। -इस प्रकार व्यर्थ का अभिमान एवं फल में आसक्ति के कारण यथार्थ स्थिति न जानने के कारण क्षीण हुए इस लोक के कारण-कर्मफल भुगत चुकने के बाद स्वर्ग से च्युत हो जाते हैं।(**यत् कर्मिणः प्रवेदयन्ति रागात्तेनातुराः क्षीणलोकाश्च्यवन्ते।**)

इसी प्रकार जो कर्मकाण्डी यज्ञकर्म (इष्ट) और जनहित (पूर्त्त) कार्यों को ही श्रेष्ठ मानते हैं और किसी अन्य वस्तु को श्रेयस्कर नहीं मानते, वे अपने कर्मों का फल स्वर्गलोक में भोगने के बाद वे इस लोक में और इससे भी निकृष्ट लोक में प्रवेश करते हैं।(**नाकस्य पृष्ठे ते सुकृते अनुभूत्वा इमं लोकं हीनतरं वा विशन्ति ।**)

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri. Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

अंगिरा ऋषि की सम्मति में यज्ञ कर्म एवं जनहित (इष्ट तथा आपूर्त्त, वापी, कूप, तडागादि पुरुषार्थ के स्मार्त कर्म) के कर्मों तक अपने को बांधे रखना मूर्खता का काम है। कर्म की अपेक्षा ज्ञान की अधिक महत्ता है तो व्यक्ति को गृहस्थ के बन्धनों से विमुक्त होकर वनों के उपयोगी वातावरण में पहुंचना चाहिए। ऋषि अंगिरा का परामर्श है जो ज्ञानमार्गी तपस्या और श्रद्धा के साथ वन में निवास करते हैं, वे हृदय से शान्त और मस्तिष्क से विद्वान् होते हुए भिक्षावृत्ति का आचरण करते हुए मृत्यु के अनन्तर सूर्यद्वार से उत्तरायण मार्ग से वहां पहुंचते हैं, जहां अमर अव्यय अविनाशी पुरुष परब्रह्म का स्थान है। सम्बद्ध मन्त्र इस प्रकार है–

तपःश्रद्धे ये ह्युपवसन्त्यरण्ये शान्ता विद्वांसो भैक्षचर्यां चरन्तः।
सूर्यद्वारेण ते विरजाः प्रयान्ति यत्रामृतः सः पुरुषो ह्यव्ययात्मा ॥

इसका अभिप्राय यही है कि देहावसान के बाद पुण्यात्मा को अत्यन्त शुभ्र ज्योति दीखती है, जिसकी ओर वह खिंच जाता है–उपनिषद् में **'सूर्यस्य रश्मिभिः यजमानं वहन्ति तथा सूर्यद्वारेण ते विरजाः प्रयान्ति।'** सम्भवतः इसी प्रकाश का उल्लेख किया गया है।

इसी प्रकार ब्रह्म का जिज्ञासु यज्ञादि कर्मों से अर्जित लोकों की परीक्षा करके विरक्त हो जाता है, उसे समझ में आ जाता है कि कर्मकाण्ड से जिसे पाया ही नहीं जा सकता, जो यज्ञादि कर्मकाण्ड के द्वारा हाथ नहीं आ सकता–उस अकृत (नित्य पदार्थ) ब्रह्म को जानने के लिए हाथ में समिधा लेकर–इस भावना से जैसे अग्नि के सम्पर्क से ये समिधाएं प्रदीप्त हो सकती हैं–श्रोत्रिय ब्रह्मनिष्ठ गुरु के चरणों में जाना चाहिए, जिससे गुरु द्वारा प्राप्त ज्ञानाग्नि से जिज्ञासु का समिधा तुल्य हृदय प्रदीप्त हो सके। सम्बन्धित मन्त्र देखिए:

परीक्ष्य लोकान् कर्मचितान् ब्राह्मणः निर्वेदमायान्नास्त्यकृतः कृतेन। तद्विज्ञानार्थं स गुरुमेवाभिगच्छेत् समित्पाणिः श्रोत्रियं ब्रह्मनिष्ठम्॥

वह विद्वान् अपने समीप आए शान्तचित्त, इन्द्रियों एवं मन पर नियन्त्रण करने वाले जितेन्द्रिय संयमी जिज्ञासु समित्पाणि शिष्य को उस ब्रह्मविद्या का तत्त्वतः उपदेश करे, जिससे वह उस सत्य अक्षर पुरुष को जान सके। इन मन्त्रों में जिज्ञासु शिष्य और गुरु के गुणों का उल्लेख है। गुरु ऐसे हों जो साधनों का प्रयोग कर ऊंचे स्तर पर पहुंच गए हों, उन्हें वेद का ज्ञान हो, वे ब्रह्मपरायण हों। दूसरी ओर जिज्ञासु शिष्य ब्रह्मनिष्ठ हो, वह विद्वान् हो, शान्तचित्त, तपस्वी और श्रद्धा से ओत-प्रोत हो। आश्रम-परिवर्त्तन उसी व्यक्ति के लिए उपयोगी हो सकता है, जो उसके लिए प्रस्तुत हो, जो यात्रा की पहली मंजिल पूरी कर अगली पर चलने के लिए उत्सुक हो, उपनिषत् के तत्त्वचिन्तक की दृष्टि से ब्रह्मविद्या प्राप्त

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri. Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

करने का अधिकार हर किसी को नहीं है । सम्बन्धित मन्त्र देखिए:

तस्मै स विद्वानुपसन्नाय सम्यक्प्रशान्तचित्ताय शमन्विताय।
येनाक्षरं पुरुषं वेद सत्यं प्रोवाच तां तत्त्वतो ब्रह्मविद्याम्॥

मुण्डक उपनिषत् के इन खण्डों का अध्ययन करने से एक सामान्य पाठक का ध्यान भारतीय षड्दर्शनों की पूर्व और उत्तर मीमांसाओं की ओर खिंचता है । पूर्वमीमांसा धर्ममीमांसा' है और उत्तरमीमांसा का विषय ब्रह्मजिज्ञासा है । पूर्वमीमांसा के अनुसार धर्म का प्रमुख भाग कर्मकाण्ड है और उस दायित्व का निर्वहन गृहस्थी ही पूर्ण कर सकते हैं । पूर्वमीमांसा ज्ञान को कर्म का अंश समझता है और गृहस्थ-त्याग को अनिवार्य नहीं समझता है । उसके विचारानुसार सभी आश्रमों में ब्रह्मज्ञान प्राप्त किया जा सकता है, उसके लिए आश्रम-परिवर्त्तन आवश्यक नहीं ।

ब्रह्म से जगत् की उत्पत्ति

अभी तक अपरा विद्या के प्रमुख उद्देश्य जीवन-व्यवहार में कृतकार्य बनाने की चर्चा की गई, उसमें कर्मकाण्ड और ज्ञानकाण्ड दोनों की चर्चा कर ज्ञानकाण्ड की श्रेष्ठता दर्शाई गई थी । अब उपनिषत् के अगले दो मुण्डकों और उनके खण्डों में ब्रह्मज्ञान की चर्चा करते हुए अंगिरा ऋषि का कथन है कि इस संसार की रचना का आदिस्त्रोत ब्रह्म है । उसी से सारी सृष्टि की रचना हुई है । ऋषि का कथन है—यह तथ्य है, यह अक्षर ब्रह्म सत्य है । जिस प्रकार अत्यन्त प्रदीप्त अग्नि से उसी के समान रूप वाली हजारों चिनगारियां (स्फुलिंग) निकलती हैं, हे सोम्य, उसी प्रकार उस अक्षर ब्रह्म से अनेक भाव अनेक पदार्थ-नाना प्रकार की वस्तुएं प्रकट होती हैं और उसी में लीन हो जाती हैं या लौट जाती हैं । सम्बन्धित मन्त्र इस प्रकार है—

तदेतत्सत्यं यथा सुदीप्तात्पावकाद्विस्फुलिङ्गाः सहस्त्रशः प्रभवन्ते सरूपाः। तथाक्षराद्विविधा सोम्य भावाः प्रजायन्ते यत्र चैवापि यन्ति॥

ऋषि अंगिरा अक्षर ब्रह्म का वर्णन इन शब्दों में करते हैं —वह निश्चय ही दिव्य है, अमूर्त्त है। उसकी कोई मूर्त्ति नहीं है। पुरुष है—वह हर पदार्थ वस्तु के अन्दर है और बाहर भी है। वह अजन्मा है—वह प्राण नहीं लेता। उसका मन भी नहीं है, मनोहीन -अमनाः। वह पवित्र या विशुद्ध है, एवं श्रेष्ठ अक्षर से भी परे है-उत्कृष्ट है। (**अक्षरात् परतः परः**)

ऋषि आगे चर्चा करते हैं- इस ब्रह्म से प्राण (जीवन) मन और सब इन्द्रियां उत्पन्न हुई। उसी से आकाश, वायु, अग्नि और सब को धारण करने वाली पृथिवी। इन पांच महाभूतों का भी उसी से जन्म है । आगे ऋषि बतलाते हैं—अग्नि द्युलोक उसका मस्तक है, चन्द्रमा और सूर्य

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri. Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

उसके नेत्र हैं, दिशाएं उसके श्रोत्र या कर्ण हैं, प्रसिद्ध वेद उसकी विस्तीर्ण वाणी हैं, वायु उसका प्राण है, सम्पूर्ण विश्व उसका हृदय है, जिसके चरणों से पृथिवी प्रकट हुई है, निश्चय ही वह देव सम्पूर्ण भूतों का अन्तरात्मा है अथवा यह विराट् पुरुष ही सब चराचर जगत् का अन्तरात्मा है । सर्वभूतान्तरात्मा ब्रह्म का विश्व रूप वाला मन्त्र इस प्रकार है–

अग्निर्मूर्द्धा चक्षुषी चन्द्रसूर्यौ दिशः श्रोत्रे वाग्विवृताश्च वेदाः। वायुः प्राणो हृदयं विश्वमस्य पद्भ्यां पृथिवी ह्येष सर्वभूतान्तरात्मा॥

ऋषि बतलाते हैं उस विराट् पुरुष की समिधा सूर्य है, उससे ही अग्नि पैदा होता है। चन्द्रमा से मेघ बने, उससे भूमि में वनस्पतियां पैदा हुई। पुरुष स्त्री में ओषधियों से उत्पन्न वीर्य का सिंचन करता है। इस प्रकार संसार में उत्पन्न हुई नानाविध वस्तुएं-प्रजाएं उस विराट् परम पुरुष से ही पैदा हुई । ऋषि इस परम्परा का विस्तार बतलाते हैं-उस विराट् पुरुष से ही ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद प्रकट हुए । उसी से दीक्षा, यज्ञ, क्रतु तथा दक्षिणा प्रकट हुए। उसी से संवत्सर, यजमान और चन्द्रमा द्वारा पवित्र किए जाने वाले और सूर्य से तप्त किए जाने वाले लोक उत्पन्न हुए हैं।(**लोकाः सोमो यत्र पवते यत्र सूर्यः।**) जहां भले कर्मों का फल मिलता है । प्रसंग को आगे बढ़ाते हुए ऋषि कहते हैं-उस विराट् पुरुष से अनेक प्रकार के देव दिव्य पुरुष पैदा हुए, उसी की सृजन शक्ति से साध्यगण, मनुष्य, पशु, पक्षी, प्राण-अपान, व्रीहि, यव, तप, श्रद्धा, सत्य, ब्रह्मचर्य और विधि (ये सब भी उसी से उत्पन्न हुए हैं ।)यह न करो, यह करो-आदि विधि -विधान भी उससे हुए ।

ऋषि इन्द्रिय, विषय और इन्द्रियस्थानादि ब्रह्मजनित ही हैं, की चर्चा करते हुए कहते हैं–उस विराट् पुरुष से ही मस्तिष्क में अवस्थित सात प्राण, उसी से सात दीप्तियां, सात विषय आदि सात समिधाएं, विषय ज्ञान आदि सात होम, सात इन्द्रियों में रहने वाले सात स्थान प्रकट हुए। इस प्रकार प्रति देह में स्थापित ये सात-सात पदार्थ उस पुरुष से ही पैदा हुए। ब्रह्म से वेद वैदिक संस्कार और यज्ञ आदि की उत्पत्ति की चर्चा से स्पष्ट है कि उसी की समुचित व्यवस्था से पुण्य कर्मों का फल मिलता है । मनुष्य शरीर की दो आंखें, दो कान, दो नासिका छिद्र और मुख के सात छिद्र ही सात गुफाएं हैं ।

अन्तिम दो मन्त्रों में दूसरे मुण्डक के पहले खण्ड के सारांश के रूप में ऋषि फिर चर्चा करते हुए कहते हैं–उसी विराट् पुरुष से सारे समुद्र और पर्वतों का आविर्भाव होता है, उसी से सब प्रकार की नदियों का प्रवाह होता है, उसी से सब ओषधियां प्रकट होती हैं और वह रस प्रकट होता है जिससे पंचभूतों के साथ यह अन्तरात्मा अवस्थित रहता है । सम्बन्धित मन्त्र यह है:

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri. Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

अतः समुद्रा गिरयश्च सर्वेऽस्मात्स्यन्दन्ते सिन्धवः सर्वरूपाः।
अतश्च सर्वा ओषधयो रसश्च येनैष भूतैस्तिष्ठते ह्यन्तरात्मा॥

ऋषि स्पष्ट करते हैं कि यह सब उस विराट् पुरुष से ही उत्पन्न हुआ है, वही सत्य है। ऋषि कहते हैं कि यह सारा जगत् परम पुरुष का ही प्रकाश है--कर्म, तप, वेद, ज्ञान और परम अमृत। यह सब विश्व कर्म और तप (ज्ञान) पुरुष ही है। वह पर और अमृत रूप ब्रह्म है। जो साधक उस विराट् पुरुष को सम्पूर्ण प्राणियों के अन्तःकरण में अवस्थित मानता है। वह इस लोक, इस जीवन में ही अविद्या की ग्रन्थियों-गांठों को हे सोम्य छिन्न-भिन्न कर देता है।

पिछले दो मन्त्रों में -९में कहा गया है-जब तुम बाहर विश्व की ओर देखोगे तो ईश्वर की महिमा दिखाई देगी। दसवें मन्त्र में कहा गया है, ब्रह्म तुम्हारे अपने हृदय की गुफा में छिपा है, उसे वहां देखो। जिस तरह अधिकतम गर्मी से तपे लोहे के गोले में अग्नि होती है और उसमें लोहा भी होता है, उसी प्रकार ब्रह्माण्ड रूपी गोले में ब्रह्म रूपी अग्नि ओत-प्रोत है, वह सब ब्रह्म है। यह अंकन भी ठीक है क्योंकि ब्रह्म उसमें अग्नि की तरह समाविष्ट होता है। पुरुष ब्रह्म में ही सारा विश्व है।

ब्रह्म का स्वरूप : उसे कैसे जानें ?

यद्यपि ब्रह्म स्वरूप विहीन है, तथापि वह अक्षर-ब्रह्म प्रकाश स्वरूप है, वह सब के हृदयों में अवस्थित है, वह दर्शन श्रवणादि प्रकारों से बुद्धि रूपी गुहा में संचार करता है, इसलिए 'गुहाचर' नाम से प्रख्यात है, वह महत्पद है। उसी में गति करने वाले निमेष, उन्मेष करने वाले वे सब समर्पित हैं- जो जीवित हैं, जो कुछ आंख के पीछे है- सब उसी पर आश्रित है, वह हमारे लिए उपयोगी सत् और हमारे लिए अनुपयोगी सभी वस्तुओं से ऊपर है, वह प्रजाओं में सर्वश्रेष्ठ वरिष्ठ है। ऋषि आगे बतलाते हैं- वह अक्षर ब्रह्म दीप्तिमान् है, वह अणु से भी अणु है और जिसमें सम्पूर्ण लोक और उन लोकों के निवासी सन्निहित हैं, वही प्राण है तथा वही वाक् और मन है, वही सत्य है, वही अमृत है (**तद् एतत् सत्यं, तद् अमृतम्।**) हे सोम्य, मनोनिवेश द्वारा वेधने योग्य है, उस चरम सत्य को तू जान ले।

ऋषि का सत्परामर्श है कि अविनाशी ब्रह्म को मन से पहुंचने के लिए उपनिषत् की परा विद्या रूपी धनुष हाथ में लेकर उस धनुष पर उपासना रूपी तेज धार पर चढ़े आत्मा रूपी महाअस्त्र को चढ़ा दे, तदनन्तर ब्रह्म-भगवान् में लीन चित्त से धनुष की डोर अपनी ओर खींचकर अविनाशी अक्षर रूपी ब्रह्म लक्ष्य को हे सोम्य, तू बींध दे। सम्बन्धित मन्त्र इस प्रकार है--

धनुर्गृहीत्वौपनिषदं महास्त्रं शरं ह्युपासानिशितं संधीयत।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri. Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

आयम्य तद् भावगतेन चेतसा लक्ष्यं तदेवाक्षरं सोम्य विद्धि॥

उक्त वचन को अधिक स्पष्ट करते हुए ऋषि अंगिरा कहते हैं- जिस धनुष को प्रयुक्त करना है वह ओंकार -ओम्-प्रणव धनुष है--यह शर बाण आत्मा है, आत्मा रूपी बाण का लक्ष्य ब्रह्म कहा जाता है, उसे बींधना हो तो अत्यन्त तन्मयता सावधानता से उसे बींधना होगा, जिस तरह तीर लक्ष्य को बींधने के लिए लक्ष्य रूप हो जाता है, उसी तरह उपासक भी ब्रह्म में लीन हो जाए। सम्बन्धित मन्त्र इस प्रकार है--

प्रणवो धनुः शरो ह्यात्मा ब्रह्म तल्लक्ष्यमुच्यते । अप्रमत्तेन वेद्धव्यं शरवत्तन्मयो भवेत् ॥

सामान्य व्यवहार में देखें, जितनी शक्ति से डोरी खींची जाती है, उतनी ही तीव्रता से बाण जाता है, उसी प्रकार जितने तीव्र वैराग्य से ओंकार का ध्यान होगा, उतनी तेजी से आत्मा परमात्मा रूपी लक्ष्य की ओर जाएगा। ऋषि स्पष्ट करते हैं--उसे ब्रह्म में द्युलोक, पृथिवी और अन्तरिक्ष आदि तीनों सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड ओत-प्रोत हैं और इसी पिण्ड में सभी प्राणों के साथ मन भी ओत-प्रोत है। उसी एक आत्मा अक्षर ब्रह्म को जानो। इस अक्षर ब्रह्म आत्मा का जान लेना अमृत-महान् पर-ब्रह्म को पाना अमरता के सेतु तक पहुंचना है ।

ओङ्कार रूप से ब्रह्मचिन्तन की विधि प्रस्तुत करते हुए ऋषि परामर्श देते हैं - रथचक्र-पहिए के केन्द्र या नाभि में जिस प्रकार अरे लगे रहते हैं, उसी प्रकार हृदय के भीतर केन्द्रबिन्दु में सब नाड़ियां एकत्र होती हैं, वहीं यह आत्मा अनेक प्रकार से प्रकट होता है । उस आत्मा-अक्षर ब्रह्म का ध्यान करो । तुम्हारा कल्याण हो, तुम अन्धकार सागर के पार हो जाओ। अगले मन्त्र में अंगिरा ऋषि कहते हैं- वह अक्षर ब्रह्म भू-लोक (भुवि) द्यु-लोक (दिव्ये)तथा अन्तरिक्ष लोक (व्योम्नि) तीनों लोकों सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड में अपनी महिमा से प्रतिष्ठित है । जैसे ब्रह्माण्ड में अक्षर ब्रह्म की महिमा दीख रही है उसी प्रकार पिण्ड के अन्नमय, प्राणमय, मनोमय, विज्ञानमय और आनन्दमय आदि पांच कोशों में अक्षर ब्रह्म की महिमा दिखाई पड़ रही है । मन, प्राण तथा हृदय के तीनों अन्नमय कोशों में वह आत्मा प्रतिष्ठित है । उसकी अनुभूति होने पर भी विवेकी पुरुष - धीर जन ध्यान योग से उस आनन्दमय प्रकाशस्वरूप अमृत ब्रह्म का साक्षात्कार करते हैं। (**तद् विज्ञानेन परिपश्यन्ति धीराः आनन्दरूपम् अमृतं यद् विभाति ।**)

ऋषि अंगिरा परमात्म-ज्ञान के साक्षात्कार का फल कहते हैं-- उस कारण कार्य रूप (परावर) ब्रह्म का साक्षात्कार करने पर इस जीव की सब हृदय ग्रन्थियां गांठें खुल जाती हैं, सारे सन्देह-संशय नष्ट हो जाते हैं और कर्मों के सारे बन्धन कर्म क्षीण हो जाते हैं। (**भिद्यते हृदयग्रन्थिश्छिद्यन्ते**

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri. Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

सर्वसंशयाः।)अगले मन्त्र में ऋषि कहते हैं–वह निर्मल-कलाहीन ब्रह्म ज्योतिर्मय हिरण्यमय परम कोश में विद्यमान है । वह शुद्ध और सम्पूर्ण ज्योतिर्मय पदार्थों की ज्योति है - ऐसा आत्मज्ञानी पुरुष अपने अनुभव से कहते हैं। **(तत् शुभ्रं ज्योतिषां ज्योतिः यत् आत्मविदः विदुः ।)**

ज्योतियों की ज्योति : ब्रह्म

ज्योतियों की ज्योति ब्रह्म की चर्चा करते हुए ऋषि बतलाते हैं–उस आत्मस्वरूप ब्रह्म में न सूर्य प्रकाशित होता है और न चन्द्रमा या तारे । वहां यह विद्युत्-बिजली भी नहीं चमकती, फिर यह अग्नि का प्रकाश क्या काम कर सकता है, उसी के प्रकाश से ये सूर्य,चन्द्र, तारे–अग्नि सब कुछ उसी से प्रकाशमान हो रहे हैं। सम्बद्ध मन्त्र इस प्रकार है–

न तत्र सूर्यो भाति न चन्द्रतारकं नेमा विद्युतो भान्ति कुतोऽयमग्निः । तमेव भान्तमनुभाति सर्वं तस्य भासा सर्वमिदं विभाति॥

ऋषि बतलाते हैं- जैसे अग्नि से चिनगारियां छिटकती हैं, वैसे ही अक्षर ब्रह्म से जगत् के विविध पदार्थ प्रकट होते हैं। जो साधक उपासक यह स्थिति समझ लेता है उसे अपने सामने ब्रह्म दीखता है, पीठ के पीछे भी ब्रह्म दिखलाई देता है, दक्षिण और उत्तर में-दाएं और बाएं- वही नीचे और ऊपर फैला हुआ दीखता है। –उसे यह सारा विश्व वरिष्ठ सर्वोत्तम दिखाई देता है। यह सारा जगत् सर्वश्रेष्ठ ब्रह्म ही है । मूल मन्त्र देखिए–

ब्रह्मैवेदममृतं, पुरस्ताद् ब्रह्म पश्चात् ब्रह्म दक्षिणतश्चोत्तरेण। अधश्चोर्ध्वञ्च प्रसृतं ब्रह्मैवेदं विश्वमिदं वरिष्ठम् ॥

ब्रह्म जीव प्रकृति का स्वतन्त्र अस्तित्व

इस प्रकार सर्वत्र ब्रह्म ही ब्रह्म है, हर पदार्थ में ब्रह्म की महत्ता दिखलाई पड़ती है। तीसरे मुण्डक के प्रथम मन्त्र में प्रकृति जीव और परमात्मा- उन तीन सत्ताओं के स्वतन्त्र अस्तित्व का परिचय देते हुए ऋषि कहते हैं- सुन्दर पंखों वाले दो पक्षी हैं, वे एक दूसरे के प्रेमी और सखा हैं। वे दोनों एक ही वृक्ष पर बैठे हुए हैं, उनमें से एक पिप्पल वृक्ष के स्वादिष्ठ फल खाता है और दूसरा न खाता हुआ केवल देखता रहता है। यह प्रसिद्ध मन्त्र इस प्रकार है–

द्वा सुपर्णा सयुजा सखाया समानं वृक्षं परिषस्वजाते । तयोरन्यः पिप्पलं स्वाद्वत्त्यनश्नन्नन्यो अभिचाकशीति ॥

ऋग्वेद के पहले मण्डल १६४ वें सूक्त का भी यही मन्त्र है । इसमें एक अलंकार द्वारा सृष्टि की यथार्थता प्रतिपादित की गई है । वृक्ष प्रकृति है, फल खाने वाला पक्षी जीव है, सब कुछ अनासक्त भाव से देख

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri. Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

कर यथार्थ फल देने वाला पक्षी परमात्मा है । अगले मन्त्र में उक्त भाव को और स्पष्ट करते हुए ऋषि कहते हैं– एक ही वृक्ष पर एक पक्षी जीवात्मा फल खाने में निमग्न है, वह अपनी दुर्बलता-शक्तिहीनता के कारण मोहग्रस्त हो शोकाकुल हो जाता है, जब यह पक्षी रूप जीव दूसरे पक्षी भगवान् को देखता है कि योगि उसकी सेवा में संलग्न हैं तो वह शोक से मुक्त हो जाता है। (**जुष्टं यदा पश्यति अन्यम् ईशम् अस्य महिमानम् इति वीतशोकः।**)

जब देखने वाला द्रष्टा उस प्रकाशमान सृष्टिकर्त्ता ब्रह्म के भी उस उत्पत्तिस्थान को देखता है। (**पश्यते रुक्मवर्णं कर्त्तारमीशं पुरुषं ब्रह्मयोनिम्।**) उस समय वह विद्वान् पुण्य-पाप दोनों का परित्याग कर निर्मल-निर्लेप हो जाता है और परम समता को प्राप्त कर लेता है । इस प्रकार जीवन में समता ही शान्ति का उपाय है । (**विद्वान् पुण्यपापे विधूय परमं साम्यम् उपैति।**)

ऋषि बतलाते हैं श्रेष्ठतम ब्रह्मज्ञ वह है जो भली प्रकार जान लेता है-वह समस्त भूतों-पदार्थों में प्रकट हो रहा है, निश्चय से वही प्राण-शक्ति प्राण है, फलतः वह अतिवादी नहीं होता-बढ़-चढ़ कर बातें नहीं करता, वह अपने आप में आत्मा में क्रीड़ा करता है-खेलता है। (**आत्मक्रीडः आत्मरतः**) ऐसा क्रियावान् पुरुष ब्रह्मवेत्ताओं में श्रेष्ठतम है । (**एवं ब्रह्मविदां वरिष्ठः।**)

ब्रह्मज्ञानी कर्मों से विरत नहीं होते । उपनिषत् के चिन्तन में जो पुरुष बाह्य पदार्थों के स्थान पर आत्मा में ही निमग्न रहता है, ऐसा व्यक्ति दूसरों से किसी प्रकार की स्पर्धा का विषय नहीं बनता, ऐसा व्यक्ति परम साम्य प्राप्त करता है और वह काम करता हुआ भी ब्रह्मज्ञानियों में श्रेष्ठ है । ऋषि बतलाते हैं--आत्मा की प्राप्ति सत्याचरण से तथा तपस्या से होती है। (**सत्येन लभ्यः तपसा ह्येष आत्मा ।**)उसे यथार्थ ज्ञान और नित्य ब्रह्मचर्य से प्राप्त किया जा सकता है। (**सम्यग् ज्ञानेन ब्रह्मचर्येण नित्यम्।**) उसे दोष हीन होकर यति लोग-योगि जन देखते हैं, वह ज्योतिर्मय शुभ्र प्रभु शरीर के आभ्यन्तर में-हृदय में विद्यमान है ।(**अन्तःशरीरे ज्योतिर्मयः हि शुभ्रः यं पश्यन्ति यतयः क्षीणदोषाः।**)

ऋषि अंगिरा शाश्वत सत्य का वह गौरव पूर्ण सन्देश देते हैं- जिसे भारत राष्ट्र ने अपना बोध-सन्देश बनाया हुआ है-संसार में सत्य की ही विजय होती है, झूठ या अनृत की नहीं। सत्य से ही भले पुरुषों को दिव्य गुण प्राप्त करने का देवयान मार्ग खुलता है, इसी मार्ग का अनुसरण कर पूर्णकाम-आप्त काम ऋषि आगे बढ़ते हैं, वहीं सत्य का परम धाम है । सम्बद्ध मन्त्र इस प्रकार है–

सत्यमेव जयते नानृतं सत्येन पन्था विततो देवयानः।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri. Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

येनाक्रमन्त्यृषयो ह्याप्तकामा यत्र तत्सत्यस्य परमं निधानम् ॥

ऋषि ने दोष दूर करने के सत्य, तप, यथार्थज्ञान और निर्विघ्न ब्रह्मचर्य के चार उपाय बतलाए हैं। इसी प्रकार सत्य में दो बातें हैं--व्यक्ति की कथनी और करनी एक रूप हो, उसका मन, वाणी और क्रिया एक रूप हो। इस प्रकार सम्यक् ज्ञान से ही ब्रह्म की प्राप्ति सम्भव है। ऋषि कहते हैं-- वह ब्रह्म महान् है, वह दिव्य है, उसका रूप इतना अधिक विराट् है कि उसकी कल्पना भी नहीं की जा सकती। (**बृहच्च तद् दिव्यमचिन्त्यरूपम्**) महान् विराट् होने के साथ वह इतना अधिक सूक्ष्म है कि उससे सूक्ष्म कुछ हो ही नहीं सकता। (**सूक्ष्माच्च तत्सूक्ष्मतरं विभाति।**) वह दूर से भी दूर और यहां पर समीप से समीप है (**दूरात्सुदूरे तदिहान्तिके च।**) वह चेतन प्राणियों के देखने वालों के लिए यहीं शरीर के अन्दर हृदय की गुहा में ही विद्यमान है, उसे देखने के लिए आंखें चाहिए। (**पश्यत्स्विहैव निहित गुहायाम्।**)

आत्म-साक्षात्कार-चित्तशुद्धि द्वारा

ऋषि सावधान करते हैं कि यह आत्मा न नेत्रों से ग्रहण किया जाता है, न वाणी से, न अन्य इन्द्रियों से, और न उसे तपस्या अथवा कर्म से ग्रहण किया जाता है। (**न चक्षुषा गृह्यते न अपि वाचा, न अन्यैः देवैः तपसा कर्मणा वा।**) बुद्धिज्ञान के प्रसाद से पवित्र शुद्धबुद्धि सम्पन्न हुआ विशुद्ध चित्त वाला व्यक्ति- इन्द्रियों की वासनाओं रूपी मल के पृथक् हो जाने पर हम से तिरोहित निराकार आत्मतत्त्व का ध्यान द्वारा साक्षात्कार कर लेता है। (**ज्ञानप्रसादेन विशुद्धसत्त्वस्ततस्तु तं पश्यते निष्कलं ध्यायमानः।**)

विशुद्ध सत्त्व व्यक्ति परमात्मा का ज्ञान-प्रसाद मिलते ही निराकार आत्मतत्त्व का ज्ञान द्वारा साक्षात्कार कर सकता है। जिज्ञासा होती है कि क्या व्यक्ति स्वयं कुछ नहीं कर सकता, क्या उसके प्रसाद की प्रतीक्षा करना ही उसकी नियति है? इस जिज्ञासा का समाधान करते हुए अंगिरा ऋषि कहते हैं-इस सूक्ष्म अणु स्वरूप आत्मा का पांचों प्राणों और पांचों इन्द्रियों से ओत-प्रोत चित्त को इन्द्रियों की वासनाओं रूपी मल से पृथक् एवं शुद्ध होने पर हम से तिरोहित हुआ आत्मा प्रकट हो जाता है। (**प्राणैः चित्तं सर्वम् ओतं प्रजानां यस्मिन् विशुद्धे विभवति एष आत्मा।**)

तत्त्ववेत्ता अंगिरा ऋषि मण्डूक उपनिषद् में चित्तशुद्धि पर विशेष बल देते हैं। इस खण्ड के आठवें मन्त्र में विशुद्धसत्त्व की महत्ता प्रतिपादित की है, तो नौवें मन्त्र में 'विशुद्धे विभवति' पर ध्यान आकर्षित किया गया है, दसवें मन्त्र में विशुद्धसत्त्व को पुनः दोहराया गया है। मलिन चित्त व्यक्ति संसाराभिमुख होता है जबकि निर्मलचित्त भगवान् की ओर केन्द्रित होता

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri. Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

है । ऋषि अंगिरा स्पष्ट कहते हैं कि विशुद्धचित्त आत्मवेत्ता मन से जिस-जिस स्थिति का चिन्तन करता है और जिन कामनाओं को पूरा करना चाहता है, वह उन-उन अवस्थाओं और कामनाओं को प्राप्त कर लेता है, इसलिए जिस जिज्ञासु को विभूतियों की कामना हो, उसे चाहिए वह किसी आत्मज्ञानी-तत्त्वज्ञानी गुरु के चरणों में जाकर उसकी सेवा करे । तीसरे मुण्डक के पहले खण्ड का अन्तिम १०वां मन्त्र इस प्रकार है-

यं यं लोकं मनसा संविभाति विशुद्धसत्त्वः कामयते यांश्च कामान् । तं तं लोकं जयते तांश्च कामांस्तस्मादात्मज्ञं ह्यर्चयेत् भूतिकामः ॥

परम पुरुष भगवान् की उपासना का फल

तीसरे मुण्डक के पहले खण्ड के अन्तिम मन्त्र में ऋषि ने जिस आत्मज्ञ आत्मवेत्ता गुरु के चरणों में जाने का परामर्श दिया है, ऋषि कहते हैं वह आत्मज्ञानी उस परम ब्रह्म परमेश्वर को जानता है, जिसमें यह ब्रह्माण्ड अवस्थित है, वहां सम्पूर्ण विश्व शुद्ध रूप से प्रकाशित हो रहा है। निस्सन्देह निष्काम भाव से कामना रहित होकर जो उस परम पुरुष भगवान् की उपासना करते हैं, वे धीर बुद्धिमान् लोग संसार के विषयों में नहीं फंसते, वे अपने वीर्य शक्ति का अतिक्रमण नहीं करते, वे इसके बन्धन से, जन्म-मरण के बन्धन से मुक्त हो जाते हैं । सम्बन्धित मन्त्र इस प्रकार है-

स वेदैतत्परं ब्रह्मधाम यत्र विश्वं निहितं भाति शुभ्रम् । उपासते पुरुषं ह्यकामास्ते शुक्रमेतदतिवर्तन्ति धीराः ॥

ऋषि शिक्षा देते हैं, जो कामना रहित होकर निष्काम धीर पुरुष हैं, वे जन्म-मरण के बन्धन से मुक्त हो जाते हैं, परन्तु जो कामनाओं से बन्धे रहते हैं, वे कामनाओं से खिंचे हुए उनकी प्राप्ति के बन्धनों में आबद्ध पैदा होते रहते हैं । स्पष्ट है जिन आत्मज्ञानियों की कामनाएं पूर्ण हो चुकी हैं, जिनकी अब कोई कामना ही नहीं है, वे इस जन्म में ही कामनारहित हो जाते हैं । इस तरह सच्चा आत्मज्ञानी कामनाओं के त्याग से जन्म-मरण के बन्धन पुनर्जन्म के चक्र से बच जाता है, उनकी सब कामनाएं यहीं विलीन हो जाती हैं।(**पर्याप्तकामस्य कृतात्मनस्तु इहैव सर्वे प्रविलीयन्ति कामाः।**)

कह सकते हैं कि यदि दूसरे सब लाभों की तुलना में आत्मलाभ ही उत्कृष्ट है तो स्वभावतः जिज्ञासा होती है कि आत्मदर्शन के लिए प्रवचन, धारणा शक्ति, अधिक श्रवण या त्याग आदि उपायों का अवलम्बन अधिक करे। ऋषि अंगिरा का परामर्श है-यह आत्मा न तो बहुत भाषण करने -पुष्कल शास्त्राध्यन (प्रवचन) से प्राप्त होने योग्य है, न बहुत बुद्धि के प्रयोग-धारणा शक्ति के परिमार्जन से मिल सकता है, न स्थान-स्थान पर बहुत से उपदेश सुनने-अधिक श्रवण करने से मिलने वाला है, प्रत्युत

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri. Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

जो कोई उसका वरण कर लेता है- जो कोई उसे जानने का प्रयत्न करता है, उसके सामने वह अपना स्वरूप खोल कर रख देता है--दूसरे शब्दों में उसे वह प्राप्त हो जाता है । सम्बन्धित मन्त्र देखिए :

नायमात्मा प्रवचनेन लभ्यो न मेधया न बहुना श्रुतेन। यमेवैष वृणुते तेन लभ्यस्तस्यैष आत्मा विवृणुते तनूं स्वाम् ॥

यह साधक जिस आत्मा का वरण करता है, वह आत्मा उसके प्रति अपना स्वरूप अभिव्यक्त कर देता है। ऋषि के इस कथन का यह अर्थ नहीं है कि परमात्मा की कृपा पाने के लिए साधक का निर्बल या बलहीन होना कोई गुण है, नहीं । उपनिषद् में ऋषि स्पष्ट कहते हैं। **नायम् आत्मा बलहीनेन लभ्यः**। जो बलहीन है, वह भी उसे प्राप्त नहीं कर सकता वैसे यदि साधक का आत्मसमर्पण उसकी शक्ति है वह उसे प्राप्त हो जाता है । साथ ही वेद में कहा गया है -**न ऋते श्रान्तस्य सख्याय देवाः** । जब तक कोई अपना पसीना वहा कर श्रान्त नहीं हो जाता, थक नहीं जाता है । तब तक भगवान् की कृपा उस पर नहीं होती। (ऋग्वेद ४।३३।११) प्रमादी-आलसी व्यक्ति से भगवान दूर रहते हैं, वह कोरी तपस्या और निष्प्रयोजन अपने को कष्ट देने वाले को भी प्राप्त नहीं होता है, परन्तु जों विद्वान् इन सच्चे त्याग आदि उपायों से लगातार यत्न करते रहते हैं, उन्हें वह प्राप्त हो जाता है और वे ब्रह्मधाम में प्रवेश करते हैं। उपनिषत् का मन्त्र इस प्रकार है--

नायमात्मा बलहीनेन लभ्यो न च प्रमादात्तपसो वाप्यलिंगात्। एतैरुपायैर्यतते यस्तु विद्वांस्तस्यैष आत्मा विशते ब्रह्म धाम ॥

तीसरे मुण्डक के दूसरे खण्ड का चौथा 'नायमात्मा' मन्त्र कठ उपनिषद् (२।२३) में भी आया है । इस प्रकार आत्मवेत्ता विद्वान् विवेकी ज्ञानवेत्ता तत्पर होकर, बल, अप्रमाद, संन्यास और ज्ञान आदि उपायों से ब्रह्मधाम में सम्यक् रूप से प्रविष्ट हो जाता है। अगले मन्त्र में ऋषि बतलाते हैं-उस आत्मा को प्राप्त कर ऋषिगण ज्ञानतृप्त आत्मवेत्ता राग-द्वेष से शून्य होकर शान्तचित्त हो जाते हैं। उस सर्वव्यापक ब्रह्म को प्राप्त कर वे धीर समाहित चित्त होकर ब्रह्म में पूरी तरह प्रविष्ट हो जाते हैं ।

ऋषि का कथन है कि वेदान्तजनित ज्ञान से तो यतिजन तत्त्व का निश्चय कर लेते हैं जो अपने प्रयत्नों से संन्यास योग से शुद्ध अन्तःकरण वाले होकर शरीर त्याग करते हैं और सब ओर से मुक्त होकर वे परम अमर धाम को प्राप्त कर लेते हैं ।

ऋषि बतलाते हैं मोक्ष काल में शरीर के प्राकृत अंश प्राणादि पन्द्रह कलाएं (प्राण को अलग करने पर प्रश्नोपनिषद् ६।२ में लिखा है- (**पुरुषः यस्मिन् षोडशकलाः प्रभवन्ति ।**) अवशिष्ट रह जाती हैं, चक्षु आदि इन्द्रियों के अधिष्ठाता समस्त देवगण आदित्य आदि प्रतिदेवों - दिव्य स्रोतों

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri. Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

में स्थानान्तरित हो जाती हैं। ज्ञान स्वरूप आत्मा और उसके सञ्चित कर्म ही उसके हाथ रह जाते हैं। वह और परमात्मा -सूक्ष्म पुरुष में एक हो जाते हैं ।

इस स्थिति का विवरण देते हुए ऋषि कहते हैं– जिस प्रकार निरन्तर बहती हुई नदियां अपना नाम-रूप त्याग कर समुद्र में विलीन हो जाती हैं, उसी प्रकार ज्ञानी पुरुष अपने नाम-रूप से विमुक्त होकर परात्पर महान् दिव्य पुरुष को प्राप्त हो जाते हैं। मूल मन्त्र इस प्रकार है–

यथा नद्यः स्यन्दमानाः समुद्रेऽस्तं गच्छन्ति नामरूपे विहाय।
तथा विद्वान्नामरूपाद्विमुक्तः परात्परं पुरुषमुपैति दिव्यम्॥

ऋषि का परामर्श है इस प्रकार जो उस परम ब्रह्म को जानता है ब्रह्म ही हो जाता है। उसके कुल में ब्रह्म को न जानने वाला कोई नहीं होता है, वह शोक से पार हो जाता है, पाप से तर जाता है, उसकी हृदय की ग्रन्थियां गांठें खुल जाती हैं और वह अमृत हो जाता है ।

ऋषि ऋचा द्वारा सीख देते हैं गुरु यह ब्रह्मविद्या ऐसे अधिकारी व्यक्तियों को दे, जो विहित कर्म करने वाले श्रोत्रिय, ब्रह्मनिष्ठ और श्रद्धावान् हों, एक ऋषि की अर्चना करते हों, जो विधिपूर्वक शिरोवत् धारण करते हों ।

पूर्वकाल में अंगिरा ऋषि ने यह ज्ञान (शौनक) को दिया था । व्रत हीन मनुष्य के लिए यह ज्ञान नहीं । परम ऋषियों को नमस्कार है; इन सच्चे ऋषियों को प्रणाम ।

तदेतत्सत्यमृषिरङ्गिराः पुरोवाच नैतदचीर्णव्रतोऽधीते । नमः परम-ऋषिभ्यो नमः परम-ऋषिभ्यः ॥

अथर्ववेद के मन्त्र भाग के अन्तर्गत मुण्डक उपनिषद् का चिन्तन है । गृहस्थी शौनक ने मुनि अंगिरा से जिज्ञासा की थी-ऐसी कौन सी वस्तु है, जिस एक के जान लेने पर सब कुछ जान लिया जाता है।

महर्षि अंगिरा ने परा और अपरा दो विद्याओं का निरूपण करते हुए सारे संसार को अपरा विद्या का विषय कहा और परा विद्या वह है जिससे अखण्ड अविनाशी एवं निष्कलंक परमार्थ तत्त्व का बोध हो। तीनों मुण्डकों में इसी गूढ़ विषय को समझाने का प्रयत्न किया गया है ।

–नरेन्द्र विद्यावाचस्पति
अभ्युदय,बी-२२,
गुलमोहर पार्क
नई दिल्ली-११००४९

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri. Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

सम्पादकीय

वेद एवं दर्शनानन्दग्रन्थसंग्रह-प्रकाशन

प्रिय पाठकगण ! सुहृद् बन्धुओ !

मैंने चारों वेदों के प्रकाशन की घोषणा करा दी। स्वामी दर्शनानन्द जी के ग्रन्थ की भी घोषणा करा दी। कार्य आरम्भ भी हो गया। उधर वेद मन्दिर का निर्माण कार्य आरम्भ हो गया। उसके सामान की खरीद, देख-रेख में छह मास निकल गये। यह कार्य पूर्ण हो गया। मॉडल टाउन छोड़कर अब वेद मन्दिर इब्राहिमपुर, दिल्ली-११००३६ में स्थायी निवास हो गया है। इधर यह कार्य सम्पूर्णता की ओर आया तो आँख का ऑपरेशन कराना पड़ा। प्रभु कृपा से आपरेशन सफल हो गया। चश्मा जून के प्रथम सप्ताह में मिलेगा। पढ़ना-लिखना बन्द है। जून से लंगर-लगोटे कसकर इन दोनों ग्रन्थों में लग जाऊँगा। इस वर्ष में दोनों ग्रन्थ अवश्य मिल जाएँगे।

आप थोड़ा-सा धैर्य रक्खें। गोविन्दराम हासानन्द ६०-७० वर्ष से आर्य जगत् की सेवा कर रहा है। आपको ग्रन्थ मिलेंगे और अवश्य मिलेंगे। दर्शनानन्दग्रन्थसंग्रह को सर्वश्रेष्ठ बनाने के लिए मैं जो परिश्रम कर रहा हूँ, वह आज तक तो किसी ने किया नहीं है। अब तक जो अनुवाद हुए हैं, शब्द और लाइनें ही नहीं पृष्ठ के पृष्ठ भी छूटे हुए हैं। इसे सुन्दरतम रूप देना है। वेदों को भी भव्यरूप में छापना है। इन सब में समय लगता है। जिन्हें बहुत जल्दी है, उन्हें आमंत्रण देता हूँ, कभी आश्रम में आ जाइए और देखिए, देर क्यों हो जाती है। इन दोनों योजनाओं में देरी होने से प्रकाशक को भी आर्थिक हानि का सामना करना पड़ रहा है क्योंकि आपको ज्ञात ही होगा की पिछले छः महीनों में कागज के मूल्यों में असाधारण वृद्धि हुई है। मूल वेद जो कि आपने लागत मात्र पर ही बुक किया है आज उसकी लागत में भी वृद्धि हो चुकी है, परन्तु फिर भी ये योजनाएँ जल्दी से जल्दी पूरी की जाएंगी तथा यह ग्रन्थ उन्हीं मूल्यों पर आपको उपलब्ध होंगे जिन पर आपने बुक किये हैं।

अतः मुझे विश्वास है कि आप सभी ग्राहकगण धैर्य तथा विश्वास बनाए रखकर सहयोग देंगे।

सधन्यवाद

—जगदीश्वरानन्द सरस्वती

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri. Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

साहित्य-समीक्षा

वेदसन्देश (दो भाग)

लेखक—प्रो० रामविचार

दोनों भागों का मूल्य १००.०० रुपये।

यह एक सर्वसम्मत तथ्य है कि स्वामी दयानन्द ने वैदिक चर्चा का पुनरुद्धार किया था और उनके अनुवर्ती विद्वानों ने विभिन्न वेद-व्याख्या के ग्रन्थ लिखकर वेदों के प्रतिपाद्य, कथ्य तथा अभिप्राय को लोकप्रिय बनाया। विगत काल में सर्व श्री स्वामी वेदानन्द तीर्थ, प्रियव्रत वेदवाचस्पति, पं० अभयदेव विद्यालंकार आदि अनेक लेखकों ने वेद मन्त्रों में निहित शिक्षणों की लोकानुरञ्जनी व्याख्या कर इनको सर्वसाधारण तथा विद्वत् वर्ग में प्रचारित किया है। प्रो० रामविचार का दो भागों में लिखित वेदसन्देश इसी परम्परा को आगे बढ़ाता है। आर्यसमाज के क्षेत्र में इस प्रकार के वेद-व्याख्यानों की दो कापियाँ हैं। प्रथम कोटि इन ग्रन्थों की है। जिनमें मन्त्रों का पद पाठ, इनमें प्रयुक्त शब्दों के व्युत्पत्ति लभ्य अर्थ देकर उनकी शास्त्रीय सन्दर्भ में गुरु गम्भीर व्याख्या की गई है। प्रायः इस प्रकार के व्याख्या ग्रन्थ विद्वत् समुदाय के लिए ही होते हैं, किन्तु साधारण पाठक उनसे विशेष लाभ नहीं उठाता।

आलोच्य ग्रन्थ की विशेषता यह है कि इनके दोनों खण्डों में विद्वान् लेखक ने २९ वेद मन्त्रों को सरल, सुबोध, विस्तृत व्याख्या इस दृष्टि से की है जिसकी सहायता से यदि कोई उपदेशक इसे आधार बनाकर व्याख्या व प्रवचन करें तो उसे सफलता मिलेगी। साथ ही सामान्य पाठक भी इस विस्तृत व्याख्या को पढ़कर वेद की जीवन निर्माणकारी शिक्षाओं को हृदयंगम कर सकेगा। मन्त्र के हार्द को समझाने के लिए बहुश्रुत तथा बहुपठित लेखक ने शतशः दृष्टान्तों, नीतिवचनों, सुभाषितों तथा शास्त्र-वाक्यों को उद्धृत किया है। मन्त्रों का चयन करने में विद्वान् व्याख्याकार ने विशेष सावधानी रक्खी है। फलतः प्रथम खण्ड में तन्तुं तन्वन् (मनुष्यता के कर्त्तव्यों का द्योतक), उलूकयातुं (दोषों से मुक्त होने की प्रेरणा), परोऽपेहि मनस्पाप (पापों से पीछा छुड़ाना), सक्तुमिव तितउना (विवेकपूर्वक कर्त्तव्य निर्धारण), सहृदयं सांमनस्यम् (गृहस्थ में सौहार्द भाव), त्र्यम्बकं यजामहे (मोक्ष लाभ), इहैव स्तं मा वि यौष्टम् (गृहस्थ का महत्त्व), दृते दृँह मा मित्रस्य मा चक्षुषा (सर्वप्रिय होने) आदि मन्त्रों की अत्यन्त

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri. Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

सारगर्भित एवं मनोज्ञ व्याख्या की गई है।

इसी प्रकार द्वितीय खण्ड में जो मन्त्र लिये गये हैं उनमें कतिपय निम्न हैं–(अष्टाचक्रा नवद्वारा)–(ईश्वरोपासना), यस्मान्न ऋते विजयन्ते जनासो (ईश्वर की महत्ता का प्रतिपादक) यज्ञेन यज्ञमयजन्त देवाः (धर्म की महत्ता) स्वस्ति पन्थामनुचरेम (कल्याण मार्ग का विवेचन), ईशावास्यम् (लोभ का त्याग), अपां मध्ये तस्थिवांसं (जल बिच मीन पियासी) कालो अश्वो वहति (काल की प्रबलता) ये सभी मन्त्र तथा इनका अभिप्राय प्रकाशन इतना उदात्त, सारगर्भित तथा प्रभावशाली है कि आबाल वृद्ध वनिता सभी स्वाध्याय तत्पर लोग इनका लाभ ले सकते हैं। इस महत्त्वपूर्ण ग्रन्थ के लेखन के लिए लेखक को साधुवाद तो दिया ही जाना चाहिए, उनसे यह भी आशा करनी चाहिए कि वे इसी ग्रन्थमाला में कुछ और भी पुष्प अर्पित करेंगे ताकि विश्व के इस आदि काव्य वेद के सर्वतोभद्र उपदेशों और शिक्षाओं से पाठक कृतार्थ हों तथा परमात्मा की इस कल्याणी वाणी का सर्वत्र सार्थक प्रचार हो सके।

–भवानीलाल भारतीय

दयानन्द जीवन चरित

लेखक : देवेन्द्रनाथ मुखोपाध्याय

यह अनूठा जीवन चरित है। लेखक ने १५ वर्ष तक सम्पूर्ण भारत में भ्रमण करके जहाँ-जहाँ ऋषि गये थे, वहाँ जाकर, जिन-जिन लोगों से मुनि मिले थे, उन-उनसे मिलकर उनके जीवन की सामग्री एवं घटनाओं का संकलन किया था। इस प्रकार यह प्रामाणिक और खोजपूर्ण संस्करण है। इसके अनुवादक हैं पं० घासीराम।

२०×३०/८ आकार (कल्याण) में ६९० पृष्ठों का है। कम्प्यूटर से कम्पोज होकर उत्तम कागज पर छपा, सम्पूर्ण कपड़े की जिल्द में उपलब्ध।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri. Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

विद्याभास्कर, वेदरत्न, न्याय-वैशेषिक, सांख्य-योगतीर्थ,
वेदान्ताचार्य, शास्त्रशेवधि

आचार्य उदयवीर शास्त्री ग्रन्थावली

(पृष्ठ संख्या ७००० के लगभग डिमाई आकार में)

ग्रन्थावली में सम्मिलित ग्यारह ग्रन्थ

१.	न्यायदर्शन भाष्य	१५०-००
२.	वैशेषिकदर्शन भाष्य	१२५-००
३.	सांख्यदर्शन भाष्य	१२५-००
४.	योगदर्शन भाष्य	१००-००
५.	वेदान्तदर्शन भाष्य (ब्रह्मसूत्र)	१८०-००
६.	मीमांसादर्शन का विद्योदय भाष्य	३५०-००
७.	सांख्यदर्शन का इतिहास	२५०-००
८.	सांख्य सिद्धान्त	२००-००
९.	वेदान्तदर्शन का इतिहास	२००-००
१०.	प्राचीन सांख्य सन्दर्भ	१००-००
११.	वीर तरंगिणी (लेखों का संग्रह)	२५०-००

सम्पूर्ण ग्रन्थावली के
ग्यारह खण्डों का मूल्य २०३०-००

यह अमूल्य ग्रन्थावली बहुत बढ़िया कागज पर, सुन्दर छपाई, पक्की कपड़े की जिल्द में नयनाभिराम भी है।

मई १९९५

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri. Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

धर्म-अर्थ-काम-मोक्ष-प्रदायिनी

महात्मा आनन्द स्वामी सरस्वती की सरल-सुबोध आध्यात्मिक पुस्तकें

आनन्द गायत्री कथा	१४-००
एक ही रास्ता	१२-००
शंकर और दयानन्द	८-००
मानव जीवन-गाथा	१३-००
सत्यनारायण व्रत कथा	५-००
भक्त और भगवान	१२-००
उपनिषदों का सन्देश	१८-००
घोर घने जंगल में	२०-००
मानव और मानवता	३०-००
प्रभु मिलन की राह	२०-००
यह धन किसका है ?	२२-००
बोध-कथाएँ	१६-००
दो रास्ते	१७-००
दुनिया में रहना किस तरह ?	१५-००
तत्वज्ञान	२०-००
प्रभु-दर्शन	१५-००
प्रभु-भक्ति	१२-००
महामन्त्र	१२-००
सुखी गृहस्थ	७-००
त्यागमयी देवियाँ	८-००

अंग्रेजी पुस्तकें

Anand Gayatry Katha	30-00
The Only Way	30-00
Bodh Kathayen	40-00
How To Lead Life?	30-00

जीवनी

महात्मा आनन्द स्वामी (उर्दू)	१०-००
महात्मा आनन्द स्वामी (हिन्दी)	२५-००

स्वामी जगदीश्वरानन्द सरस्वती कृत विद्वत्तापूर्ण पुस्तकें

महाभारतम् (तीन खण्ड)	६००-००
वाल्मीकि रामायण	१७५-००
षड्दर्शनम्	१५०-००
चाणक्यनीति दर्पण	६०-००
विदुरनीतिः	४०-००
ब्रह्मचर्य गौरव	९-००
विद्यार्थियों की दिनचर्या	९-००
दिव्य दयानन्द	१२-००
कुछ करो कुछ बनो	१२-००
मर्यादा पुरुषोत्तम राम	१२-००
आदर्श परिवार	१५-००
वैदिक उदात्त भावनाएँ	१५-००
वेद सौरभ	१२-००
दयानन्द सूक्ति और सुभाषित	२५-००
वैदिक विवाह पद्धति	८-००
ऋग्वेद सूक्ति सुधा	२५-००
यजुर्वेद सूक्ति सुधा	१२-००
अथर्ववेद सूक्ति सुधा	१५-००
सामवेद सूक्ति सुधा	१२-००
ऋग्वेद शतकम्	१०-००
यजुर्वेद शतकम्	१०-००
सामवेद शतकम्	१०-००
अथर्ववेद शतकम्	१०-००
भक्ति संगीत शतकम्	६-००
चमत्कारी ओषधियाँ	१२-००
घरेलू ओषधियाँ	१२-००
चतुर्वेद शतकम् (सजिल्द)	५०-००
स्वर्ण पथ	१२-००
प्रार्थना लोक	४०.००
प्रार्थना-प्रकाश	८.००
प्रभात-वन्दन	८.००
शिवसंकल्प	८.००

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri. Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

हमारे महत्त्वपूर्ण प्रकाशन

आदि शंकराचार्य वेदान्ती नहीं थे	*स्वामी विद्यानन्द सरस्वती*	४०-००
वेद-मीमांसा	*स्वामी विद्यानन्द सरस्वती*	५०-००
सृष्टि विज्ञान और विकासवाद	*स्वामी विद्यानन्द सरस्वती*	४०-००
वैदिक विचारधारा का वैज्ञानिक आधार	*पं० सत्यव्रत सिद्धान्तालंकार*	१५०-००
दयानन्द जीवन चरित	*लेखक : देवेन्द्र मुखोपाध्याय अनु० : पं० घासीराम*	२५०-००
शतपथब्राह्मण (तीन खण्ड)	*अनु० पं० गंगाप्रसाद उपाध्याय*	१८००-००
महात्मा हंसराज (जीवनी)	*प्रा० राजेन्द्र जिज्ञासु*	६०-००
महात्मा हंसराज ग्रन्थावली (चार खण्ड)	*लेखक-सम्पादक प्रा० राजेन्द्र जिज्ञासु*	२४०-००
आर्य सूक्ति सुधा	*प्रा० राजेन्द्र जिज्ञासु*	१२-००
स्वामी श्रद्धानन्द ग्रन्थावली (ग्यारह खण्ड)	*ले० स० डॉ० भवानीलाल भारतीय तथा प्रो० राजेन्द्र जिज्ञासु*	६६०-००
चयनिका	*क्षितीश वेदालंकार*	१२५-००
वैदिक मधुवृष्टि	*पं० रामनाथ वेदालंकार*	६०-००
वेदोद्यान के चुने हुए फूल	*आ० प्रियव्रत वेदवाचस्पति*	५०-००
महाभारत सूक्तिसुधा	*पं० चन्द्रभानु सिद्धान्तभूषण*	४०-००
श्यामजी कृष्ण वर्मा	*डॉ० भवानीलाल भारतीय*	२४-००
आर्यसमाज विषयक साहित्य परिचय	*डॉ० भवानीलाल भारतीय*	२५-००
कल्याणमार्ग का पथिक (स्वामी श्रद्धानन्द की जीवनी)	*डॉ० भवानीलाल भारतीय*	प्रेस में
आर्यसमाज के बीस बलिदानी	*डॉ० भवानीलाल भारतीय*	१५-००
धर्म का स्वरूप	*डॉ० प्रशान्त वेदालंकार*	५०-००
ऋषि बोध कथा	*स्वामी वेदानन्द सरस्वती*	१०-००
वैदिक धर्म	*स्वामी वेदानन्द सरस्वती*	२५-००
ईश्वर का स्वरूप	*सुरेशचन्द्र वेदालंकार*	प्रेस में
सहेलियों की वार्ता	*सुरेशचन्द्र वेदालंकार*	२०-००
सन्ध्या रहस्य	*पं० विश्वनाथ विद्यालंकार*	२५-००
आर्यसमाज का कायाकल्प कैसे हो ?	*प्रो० रामविचार एम० ए०*	४-००
वैदिक धर्म का संक्षिप्त परिचय	*ओम्प्रकाश त्यागी*	६-००
पूर्व और पश्चिम	*नित्यानन्द पटेल*	३५-००
सन्ध्या विनय	*नित्यानन्द पटेल*	६-००
गीत सागर	*पं० नन्दलाल वानप्रस्थी*	२५-००
वेद भगवान बोले	*पं० वा० विष्णुदयाल (मारीशस)*	१५-००
हैदराबाद के आर्यों की साधना व संघर्ष	*पं० नरेन्द्र*	१५-००
आचार्य शंकर का काल	*आ० उदयवीर शास्त्री*	१०-००

मई १९९५

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri. Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

याज्ञिक आचार-संहिता	पं० वीरसेन वेदश्रमी	४५-००
प्राणायाम विधि	महात्मा नारायण स्वामी	२-००
प्रेरक बोध कथाएँ	नरेन्द्र विद्यावाचस्पति	१५-००
ओंकार गायत्री शतकम्	कवि कस्तूरचन्द	३-००
जीवात्मा	पं० गंगाप्रसाद उपाध्याय	४०.००
सन्ध्या : क्या, क्यों, कैसे	पं० गंगाप्रसाद उपाध्याय	१५-००
विवाह और विवाहित जीवन	पं० गंगाप्रसाद उपाध्याय	१८-००
जीवन गीत	धर्मजित् जिज्ञासु	१२-००
पंचमहायज्ञविधि	महर्षि दयानन्द	३-००
व्यवहारभानु	महर्षि दयानन्द	४-००
आर्योद्देश्यरत्नमाला	महर्षि दयानन्द	१-५०
स्वमन्तव्यामन्तव्यप्रकाश	महर्षि दयानन्द	१-५०
ब्रह्मचर्यसन्देश	सत्यव्रत सिद्धान्तालंकार	२५-००
श्रीमद्भगवद्गीता	पं० सत्यपाल विद्यालंकार	१५-००

WORKS OF SVAMI SATYAPRAKASH SARASVATI

Founders of Sciences in Ancient India (Two Vols.)	500-00
Coinage in Ancient India (Two Vols.)	600-00
Geometry in Ancient India	350-00
Brahmgupta and His Works	350-00
God and His Divine Love	5-00
The Critical and Cultural Study of Satapath Brahman	In Press
Speeches, Writings & Addresses Vol.I : VINCITVERITAS	150-00
Speeches Writings & Addresses Vol.II : ARYA SAMAJ; A RENAISSANCE	150-00
Speeches, Writings & Addresses Vol. III : DAYANAND ; A PHILOSOPHER	150-00
Speeches, Writings & Addresses Vol. IV THREE LIFE HAZARDS	150-00

कर्म काण्ड की पुस्तकें

आर्य सत्संग गुटका	३-००	संध्या-हवन-दर्पण (उर्दू)	८-००
पंचयज्ञ प्रकाशिका	८-००	सत्संग मंजरी	६-००
वैदिक संध्या	१-००	Vedic Prayer	3-00
सामाजिक पद्धतियाँ (मदनजीत आर्य)	१२-००		

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri. Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

घर का वैद्य

जब प्रकृति की अनमोल दवाइयाँ आपको आसानी से उपलब्ध हों तो गोली, पुड़िया, कैप्सूल या इन्जेक्शन की क्या जरूरत है ?

घर का वैद्य—प्याज	७-००	घर का वैद्य—हल्दी	७-००
घर का वैद्य—लहसुन	७-००	घर का वैद्य—बरगद	७-००
घर का वैद्य—गन्ना	७-००	घर का वैद्य—दूध-घी	७-००
घर का वैद्य—नीम	७-००	घर का वैद्य—दही-मट्ठा	७-००
घर का वैद्य—सिरस	७-००	घर का वैद्य—हींग	७-००
घर का वैद्य—तुलसी	७-००	घर का वैद्य—नमक	७-००
घर का वैद्य—आँवला	७-००	घर का वैद्य—बेल	७-००
घर का वैद्य—नींबू	७-००	घर का वैद्य—शहद	७-००
घर का वैद्य—पीपल	७-००	घर का वैद्य—फिटकरी	७-००
घर का वैद्य—आक	७-००	घर का वैद्य—साग-भाजी	७-००
घर का वैद्य—गाजर	७-००	घर का वैद्य—अनाज	७-००
घर का वैद्य—मूली	७-००	घर का वैद्य—फल-फूल	७-००
घर का वैद्य—अदरक	७-००	घर का वैद्य—धूप-पानी	१५-००

सभी छब्बीस पुस्तकें छः आकर्षक जिल्दों में भी उपलब्ध

घर का वैद्य-१ (प्याज, लहसुन, गन्ना, नीम, सिरस)	४५-००
घर का वैद्य-२ (तुलसी, आँवला, नींबू, पीपल, आक)	४५-००
घर का वैद्य-३ (गाजर, मूली, अदरक, हल्दी, बरगद)	४५-००
घर का वैद्य-४ (दूध-घी, दही-मट्ठा, हींग, नमक, बेल)	४५-००
घर का वैद्य-५ (शहद, अनाज, फिटकरी, साग-भाजी, फल-फूल)	४५-००
घर का वैद्य—धूप-पानी	४०-००

चित्र

स्वामी दयानन्द (झण्डेवाला)	१६" × २२" बहुरंगी	६-००
स्वामी दयानन्द (कुर्सी)	१८" × २२" एक रंग	३-००
स्वामी दयानन्द (आसन)	१८" × २२" एक रंग	३-००
स्वामी श्रद्धानन्द	१८" × २२" एक रंग	३-००
गुरु विरजानन्द	१८" × २२" एक रंग	३-००
पण्डित लेखराम	१८" × २२" एक रंग	३-००
स्वामी दर्शनानन्द	१८" × २२" एक रंग	३-००
पं० गुरुदत विद्यार्थी	१८" × २२" एक रंग	३-००
महात्मा हंसराज	१८" × २२" एक रंग	३-००

मई १९९५

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri. Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

बाल साहित्य

आर्य नेताओं की बालोपयोगी जीवनियाँ

महर्षि दयानन्द	त्रिलोकचन्द विशारद	४-५०
गुरु विरजानन्द	त्रिलोकचन्द विशारद	४-५०
स्वामी श्रद्धानन्द	त्रिलोकचन्द विशारद	४-५०
धर्मवीर पं० लेखराम	त्रिलोकचन्द विशारद	३-००
मुनिवर पं० गुरुदत्त	त्रिलोकचन्द विशारद	३-००
स्वामी दर्शनानन्द	सत्यभूषण वेदालंकार	३-००
महात्मा हंसराज	प्रा० राजेन्द्र जिज्ञासु	४-५०
वीतराग सेनानी स्वामी स्वतन्त्रानन्द	प्रा० राजेन्द्र जिज्ञासु	४-५०
तपोधन महात्मा नारायण स्वामी	प्रा० राजेन्द्र जिज्ञासु	५-५०
देवतास्वरूप भाई परमानन्द	प्रा० राजेन्द्र जिज्ञासु	५-५०
नैतिक शिक्षा—प्रथम	सत्यभूषण वेदालंकार एम० ए०	२.५०
नैतिक शिक्षा—द्वितीय	सत्यभूषण वेदालंकार एम० ए०	२.५०
नैतिक शिक्षा—तृतीय	सत्यभूषण वेदालंकार एम० ए०	३.५०
नैतिक शिक्षा—चतुर्थ	सत्यभूषण वेदालंकार एम० ए०	४-५०
नैतिक शिक्षा—पंचम	सत्यभूषण वेदालंकार एम० ए०	४.५०
नैतिक शिक्षा—षष्ठ	सत्यभूषण वेदालंकार एम० ए०	५.५०
नैतिक शिक्षा—सप्तम	सत्यभूषण वेदालंकार एम० ए०	५.५०
नैतिक शिक्षा—अष्टम	सत्यभूषण वेदालंकार एम० ए०	५.५०
नैतिक शिक्षा—नवम	सत्यभूषण वेदालंकार एम० ए०	८००
नैतिक शिक्षा—दशम	सत्यभूषण वेदालंकार एम० ए०	८००
ब्रह्मचर्य गौरव	स्वामी जगदीश्वरानन्द	९००
विद्यार्थियों की दिनचर्या	स्वामी जगदीश्वरानन्द	९००
स्वर्ण पथ	स्वामी जगीदश्वरानन्द	१२००
आचार्य गौरव	ब्र० नन्दकिशोर	५००
त्यागमयी देवियाँ	महात्मा आनन्द स्वामी	८००
हमारे बालनायक	सुनील शर्मा	८००
देश के दुलारे	सुनील शर्मा	८००
हमारे कर्णधार	सुनील शर्मा	८००
आदर्श महिलाएँ	नीरू शर्मा	८००
कथा पच्चीसी	स्वामी दर्शनानन्द	८००
बाल शिक्षा	स्वामी दर्शनानन्द	२.५०
वैदिक शिष्टाचार	हरिश्चन्द्र विद्यालंकार	३००
दयानन्द चित्रावली	पं० रामगोपाल विद्यालंकार	२५००
आर्य सूक्ति सुधा	प्रा० राजेन्द्र जिज्ञासु	१२-००

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri. Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

Now available

English translation of Books of

Mahatma Anand Swami Saraswati

The renowned Sanyasi, metaphysician and expositor, in India and abroad, of the holy message of Vedas and inspirer of healthy and righteous living will surely provide you inner peace and bliss.

1. Bodh Kathayen (बोध कथाएँ)	40.00
2. How to lead Life ? (दुनिया में रहना किस तरह ?)	30.00
3. Anand Gayatri Katha (आनन्द गायत्री कथा)	30.00
4. The Only Way (एक ही रास्ता)	30.00

नया प्रकाशन—

आर्य सूक्ति सुधा

लेखक : प्रा० राजेन्द्र जिज्ञासु

यह नया प्रकाशन धर्म प्रेमियों के लिए एक अद्‌भुत भेंट है। आर्य सामाजिक साहित्य में यह अपने विषय की प्रथम पुस्तक है। महर्षि दयानन्द जी महाराज से लेकर शास्त्रार्थ महारथी श्री पं० शान्तिप्रकाश जी व श्रद्धेय पं० युधिष्ठिर जी मीमांसक तक अधिक से अधिक शीर्षस्थ वैदिक विद्वानों की सूक्तियों का संग्रह समुद्र मन्थन जैसा प्रयास है।

थोड़ा गुड़ डालकर जो अधिक मीठा चाहते हैं, वे इस एक पुस्तक के स्वाध्याय से वैदिक धर्म के सभी मूलभूत सिद्धान्तों का ज्ञान प्राप्त कर सकते हैं। आर्य गवेषक व लेखक प्रा० राजेन्द्र जिज्ञासु जी ने हमारे विशेष अनुरोध पर यह पुस्तक लिखी है।

मूल्य : १२.०० रु०

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri. Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

शुभ सूचना

विशेष छूट

यदि आप महर्षि के अमर ग्रन्थ **'सत्यार्थप्रकाश'** को समझना चाहते हैं तो प्रस्तुत है इस ग्रन्थ का आधुनिक हिन्दी रूपान्तर। रूपान्तरकार हैं—आर्यजगत् के सुप्रसिद्ध विद्वान् **स्वामी जगदीश्वरानन्द सरस्वती**।

स्वामी जी ने कम से कम ४५ बार इस ग्रन्थ का आद्योपान्त पाठ किया है। इस के प्रत्येक वाक्य को समझने का प्रयत्न किया है। इस में जो छापे की अशुद्धियां रह गयी थीं, प्रूफ व संशोधकों की असावधानी से कोई शब्द छूट गया था, इस प्रकार की सभी अशुद्धियों को ठीक कर दिया गया है।

जैसे सत्यार्थप्रकाश के गुजराती, बंगाली, मराठी, तेलुगु, असमिया आदि भाषाओं में अनुवाद हुए हैं, उसी प्रकार यह संस्करण आधुनिक हिन्दी रूपान्तर है।

यह संस्करण प्रेस में पहुंच चुका है। इसमें कम्प्यूटरकृत ४६४ पृष्ठ हैं, अन्त में अनुक्रमणिका भी दी गयी है। फिल्म बन गयी है। छपाई आरम्भ हो गयी है। उत्तम कागज व मोतियों जैसी छपाई होगी। मई माह में आकर्षक व मजबूत बाइण्डिग होकर विक्रयार्थ दुकान पर पहुंच जाएगा।

इस ग्रन्थ का मूल्य १२५-०० रु० है, परन्तु जो पाठक, सदस्य, आर्यसमाजें, ३१ मई १९९५ तक अपना आदेश और धन भेज देंगे, उन्हें यह ग्रन्थ केवल १००-०० रु० प्रति के हिसाब से मिल जाएगा। डाक व्यय १२-०० रु० ग्राहक को ही देना होगा। दो प्रतियों का डाक व्यय १८-०० रु० होगा तथा तीन का २४-०० रु०। यह संस्करण बहुत सीमित संख्या में छप रहा है। अपना धनादेश शीघ्र भेज दें।

विजयकुमार गोविन्दराम हासानन्द

४४०८, नई सड़क, दिल्ली-६

प्रकाशक-मुद्रक अजयकुमार ने सम्पादित कर अजय प्रिंटर्स, दिल्ली-३२ में मुद्रित करा वेद प्रकाश कार्यालय, ४४०८ नयी सड़क, दिल्ली से प्रसारित किया।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi